

मैंने इस्लाम को एक धर्म के रूप में
अपनाया, बिना यीशु मसीह (उनपर
शांति हो) या सर्वशक्तिमान ईश्वर के
किसी भी अन्य नबी पर अपने विश्वास
को खोए हुए।

“कहो (हे नबी!), ‘हे किताब वालों! आओ हम उस
बात पर एकमत हो जाएँ जो हमारे और तुम्हारे
बीच समान है: कि हम अल्लाह के सिवा किसी की
इबादत न करें, और उसके साथ किसी को शरीक
न ठहराएँ...”
(कुरआन 3:64)

तैयार किया गया:
मुहम्मद अल-सैयद मुहम्मद

(पुस्तक: "इस्लाम के नबी मुहम्मद (उन पर शांति हो) पर विश्वास क्यों करें?" से)

[Why Believe in the Prophet of Islam, Muhammad (peace be upon him)?]

अब जब हम इस शीर्षक पर विचार कर रहे हैं — "मैंने इस्लाम को एक धर्म के रूप में अपनाया, बिना यीशु मसीह (उनपर शांति हो) या सर्वशक्तिमान ईश्वर के किसी भी अन्य नबी पर अपने विश्वास को खोए हुए।" — तो यह प्रश्न उठता है:

इस्लाम को अपनाना लाभ और विजय कैसे है?

और कैसे मैं यीशु मसीह (उन पर शांति हो) या किसी भी नबी पर विश्वास खोए बिना इस्लाम को अपना सकता हूँ?

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी विषय को तर्कसंगत और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से देखने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति व्यक्तिगत इच्छाओं और पूर्वाग्रहों से मुक्त हो।

स्वस्थ मस्तिष्क वाले लोग जिस पर सहमत होते हैं, उस सोच के उपहार का उपयोग करते हुए जिसे अल्लाह (ईश्वर) ने मनुष्यों को प्रदान किया है, विशेष रूप से जब विषय ईश्वर, सृष्टिकर्ता, महान और सर्वोच्च में विश्वास का हो, और वह आस्था जिसके लिए हर व्यक्ति को अपने पालनहार के सामने उत्तरदायी ठहराया जाएगा।

यह आवश्यक बनाता है कि व्यक्ति में सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता हो और वह उचित रूप से चुनाव करे, मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार, उस सर्वश्रेष्ठ विश्वास की खोज करे जो ईश्वर की महानता के योग्य हो।

- जब कोई व्यक्ति इस्लाम की सत्यता के प्रमाणों को देखता है, तो वह इस्लाम को प्राप्त करने की अनुभूति करता है और उसे देखता है, और उन सबूतों को जो इसके नबी मुहम्मद (उन पर शांति हो) के संदेश की पुष्टि करते हैं, जो इस विश्वास के प्रचारक बनकर आए।

ऐसा व्यक्ति तब ईश्वर की प्रशंसा करेगा कि उसने उसे इस्लाम जैसे धर्म की नेमत की ओर मार्गदर्शन दिया, और उसे इसकी सत्यता और इसके नबी के संदेश को पहचानने की क्षमता प्रदान की।

संक्षेप में, इस सच्चाई और प्रमाणों में से कुछ निम्नलिखित हैं:

- पहला बिंदु:

पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) अपनी युवावस्था से ही अपने लोगों के बीच अपने उत्तम नैतिक गुणों के लिए प्रसिद्ध थे। ये गुण स्पष्ट रूप से इस बात को दर्शाते हैं कि अल्लाह ने उन्हें नबूवत के लिए अपनी महान बुद्धिमत्ता से चुना। इन गुणों में सबसे प्रमुख हैं: उनकी सत्यनिष्ठा (सच्चाई) और विश्वसनीयता। यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि एक ऐसा व्यक्ति, जिसे इन्हीं गुणों के आधार पर उपाधियाँ दी गई हों, वह सत्यता को त्याग दे और अपनी क़ौम से झूठ बोले — और उससे भी बढ़कर यह कि वह ईश्वर पर झूठ बोलते हुए यह दावा करे कि वह नबी और रसूल है।

- दूसरा बिंदु:

उनकी दावत (नबूवत की पुकार), शुद्ध मानव फितरत (स्वाभाविक प्रवृत्ति) और तर्कसंगत सोच के अनुरूप थी। इसमें शामिल हैं:

☞ ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास, उसके इष्टत्व (उलूहिय्यत) में एकता, उसकी महानता और उसकी शक्ति की व्यापकता में यकीन।

☞ उसके अलावा किसी और की इबादत (पूजा) या प्रार्थना न करना — न इंसानों की, न पत्थरों की, न जानवरों की, न पेड़ों की।

☞ उसके अलावा किसी से डरना या किसी से उम्मीद रखना नहीं।

जैसे कोई व्यक्ति यह सोचता है: "मुझे किसने पैदा किया? और इन सभी सृष्टियों को किसने अस्तित्व में लाया?" — तो इसका तार्किक उत्तर यह होगा: "जिसने इन सबको पैदा किया है, वह निस्संदेह एक शक्तिशाली और महान ईश्वर है।" क्योंकि 'शून्य से किसी चीज़ को पैदा करने की शक्ति' केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर के पास ही हो सकती है "इसलिए यह सोचना असंभव है कि अस्तित्वहीनता किसी चीज़ को पैदा कर सकती है।"।

और जब वह पूछता है: "तो इस ईश्वर को किसने पैदा किया?" — और यदि उत्तर दिया जाए: "निश्चित रूप से कोई और ईश्वर जिसने उसे पैदा किया," तो वह व्यक्ति इस प्रश्न को बार-बार दोहराता रहेगा, और हर बार वही उत्तर पाता रहेगा — और यह अंतहीन चक्र बन जाएगा। इसलिए इस प्रश्न का तार्किक उत्तर यही है: उस सृष्टिकर्ता ईश्वर का कोई रचयिता या उत्पत्ति करने वाला नहीं है, क्योंकि वही सर्वशक्तिमान है जो शून्य से सृष्टि कर सकता है। और

यही वह सच्चा ईश्वर है — एकमात्र, अद्वितीय, और सिर्फ वही पूजा के योग्य है।

इसके अतिरिक्त, यह ईश्वर (अल्लाह) की महानता और पवित्रता के खिलाफ है कि वह किसी ऐसे मानव शरीर में समा जाए जो सोता है, मूत्र त्याग करता है और मल त्याग करता है। यही बात जानवरों (जैसे गाय आदि) पर भी लागू होती है — विशेषकर जबकि इन सबका अंतिम परिणाम मृत्यु और सड़ने वाली लाश बन जाना है।

■ इस विषय में कृपया पुस्तक “हिंदू और मुस्लिम के बीच एक शांत संवाद “A Quiet Dialogue between a Hindu and a Muslim”” का संदर्भ लें।

☞ यह पुकार भी शामिल है कि ईश्वर को मूर्तियों या किसी दृश्य रूप में चित्रित न किया जाए, क्योंकि वह हर उस कल्पना और छवि से कहीं अधिक महान है जिसे इंसान अपने मन से बना सकता है या अपनी इच्छाओं से गढ़ सकता है।

■ इस विषय में कृपया पुस्तक “एक बौद्ध और एक मुसलमान के बीच शांतिपूर्ण संवाद “A Peaceful Dialogue Between a Buddhist and a Muslim”” का संदर्भ लें।

☞ यह पुकार भी है कि ईश्वर को संतान उत्पन्न करने की आवश्यकता से भी पवित्र माना जाए, क्योंकि वह अकेला है — न वह किसी से पैदा हुआ है, न ही उसे किसी को जन्म देने की आवश्यकता है। यदि हम मान लें कि ईश्वर को कोई संतान चाहिए, तो उसे दो, तीन या और अधिक संतानों होने से कौन रोक सकता है? क्या इससे उन संतानों को भी दिव्यता (ईश्वरत्व) नहीं मिल जाएगी? और क्या इससे इबादत और प्रार्थना कई देवताओं की ओर मुड़ने नहीं लगेगी?

☞ यह पुकार भी शामिल है कि ईश्वर को उन घृणित गुणों से پاک (निर्दोष) माना जाए जो कुछ अन्य धर्मों में उसकी ओर झूठे रूप से जोड़े गए हैं, जैसे:

- यहूदी और ईसाई धर्म में ईश्वर को इस रूप में दर्शाया गया है कि उसने मानव जाति को पैदा करने पर पछतावा और दुख प्रकट किया — जैसा कि उत्पत्ति (Genesis) 6:6 में बताया गया है। (*ईसाई बाइबल में यहूदी धर्मग्रंथ पुराने नियम (Old Testament) के रूप में शामिल हैं।*) जबकि पछतावा और दुख केवल तब होता है जब कोई व्यक्ति किसी कार्य में गलती कर बैठता है, और उसे उसके परिणामों का पूर्वज्ञान नहीं होता।

- यहूदी और ईसाई धर्म के अनुसार, ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाने के बाद विश्राम किया — जैसा कि निर्गमन (Exodus) 31:17 में उल्लेख है — और उसने फिर से अपनी ऊर्जा प्राप्त की (अंग्रेज़ी अनुवाद के अनुसार)। जबकि विश्राम और ऊर्जा पुनः प्राप्त करना केवल थकावट और श्रम के बाद होता है, और यह ईश्वर की महानता के विपरीत है।

✞ इस विषय में कृपया पुस्तक “इस्लाम, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म की तुलना और इनके बीच चुनाव “A Comparison Between Islam, Christianity, Judaism, and The Choice Between Them”” का संदर्भ लें।

☞ यह पुकार भी है कि ईश्वर को नस्लभेद (racism) जैसे दोष से भी پاک माना जाए — जैसा कि यहूदी धर्म ईश्वर को केवल एक जाति या समुदाय का ईश्वर मानता है। जबकि हर इंसान अपने स्वाभाव में नस्लभेद को अस्वीकार करता है और घृणा करता है — और यह वही प्रवृत्ति है जो ईश्वर ने खुद उनमें रखी है — तो फिर यह कैसे उचित हो सकता है कि वही ईश्वर स्वयं नस्लवादी हो?

☞ यह पुकार ईश्वर के गुणों की महानता, पूर्णता और सुंदरता में विश्वास की भी है — जैसे कि उसकी असीम शक्ति, उसकी परिपूर्ण बुद्धिमत्ता और हर चीज़ को घेर लेने वाला उसका ज्ञान।

☞ यह पुकार यह विश्वास करने की है कि ईश्वर ने किताबें, पैगंबर और फ़रिश्ते भेजे हैं।

इसकी एक मिसाल इस प्रकार दी जाती है: जैसे कोई जटिल मशीन अपने निर्माता द्वारा दिए गए निर्देशों के बिना ठीक से काम नहीं कर सकती — और उसे कैसे उपयोग किया जाए, यह जानने के लिए मैनुअल की ज़रूरत होती है — और यह मैनुअल उसके निर्माता की मौजूदगी को भी साबित करता है।

उसी तरह, इंसान — जो किसी भी मशीन से कहीं अधिक जटिल है — उसके जीवन के मार्गदर्शन और संचालन के लिए एक मार्गदर्शक किताब और स्पष्ट दिशा-निर्देशों की आवश्यकता होती है।

यह मार्गदर्शन ईश्वर की ओर से उसके द्वारा भेजे गए नबियों के ज़रिए मिलता है, जिन्हें वह चुनता है, और उनके पास अपना संदेश उस फ़रिश्ते के माध्यम से भेजता है जिसे वह इस कार्य के लिए नियुक्त करता है — ताकि यह संदेश शरीयत और शिक्षाओं के रूप में मनुष्यों तक पहुँचे।

☞ यह पुकार ईश्वर के नबियों और रसूलों के दर्जे और मर्यादा को ऊँचा मानने की भी है, और उन्हें उन कार्यों से पाक मानने की जो अन्य धर्मों में झूठे तौर पर उनकी ओर जोड़े गए हैं — ऐसे कार्य जो किसी सामान्य अच्छे व्यक्ति के लिए भी अनुचित हैं, न कि किसी नबी के लिए। जैसे:

- यहूदी और ईसाई धर्म का यह आरोप कि पैगंबर हारून (Aaron) ने बछड़े की मूर्ति की पूजा की — बल्कि उन्होंने न केवल उसकी पूजा की, बल्कि उसके लिए मंदिर भी बनाया और बनी इस्राईल को उसका पूजक बनने का आदेश दिया — जैसा कि निर्गमन (Exodus) अध्याय 32 में है।
- उनका यह आरोप कि पैगंबर लूत (Lot) ने शराब पी और अपनी दोनों बेटियों को गर्भवती किया, और उन्होंने उनसे संतानें उत्पन्न कीं — जैसा कि उत्पत्ति (Genesis) अध्याय 19 में है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान अल्लाह ने जिन महान लोगों को अपने और अपनी सृष्टि के बीच संदेशवाहक के रूप में चुना — अर्थात् नबी और रसूल — यदि किसी व्यक्ति द्वारा उनकी निंदा की जाती है, तो यह वास्तव में ईश्वर के चुनाव की निंदा करना है। इसका अर्थ यह होगा कि ईश्वर ने जिन्हें मानवता का मार्गदर्शक बनाया, उन्हें चुनने में वह अज्ञानी या अल्पदर्शी था — (ईश्वर इससे पूर्णतः पवित्र है)। यह उसकी हिकमत (बुद्धिमत्ता) पर प्रश्नचिह्न लगाना है। प्रश्न यह उठता है: यदि स्वयं नबी और रसूलों को उन अनैतिकताओं से नहीं बचाया गया जिनका आरोप अन्य धर्मों में उन पर लगाया गया है, तो फिर उनके अनुयायी कैसे उन बुराइयों से सुरक्षित रहेंगे? इससे तो उन अनैतिक कार्यों को अपनाने के लिए बहाना बन सकता है और वे समाज में फैल सकते हैं।

☞ यह पुकार है कि इंसान पुनरुत्थान (पुनर्जीवन) और हिसाब-किताब के दिन (क्रियामत) पर ईमान लाए — जब मृत्यु के बाद सभी प्राणी दोबारा जीवित किए जाएंगे, फिर उनका हिसाब लिया जाएगा। जो ईमान लाया और अच्छे कार्य किए, उसे शाश्वत सुख और इनाम मिलेगा, और जिसने कुफ्र और बुरे कर्म किए, उसे दुःखद जीवन और गंभीर दंड मिलेगा।

☞ यह पुकार है कि इंसान धर्मनिर्देश (legislation) और नैतिक शिक्षाओं में उस रास्ते को अपनाए जो सत्य है, और पहले के धर्मों की विकृतियों को दूर करे। इसका एक उदाहरण है:

► महिलाओं का विषय:

यहूदी और ईसाई परंपरा में हव्वा (आदम की पत्नी, उन पर शांति हो) को आदम के अवज्ञा का कारण बताया गया है — कि उन्होंने आदम को उस पेड़ से खाने के लिए उकसाया जिससे उन्हें उनके पालनहार ने रोका था, जैसा कि उत्पत्ति (Genesis) 3:12 में उल्लेख है। और इसके लिए ईश्वर ने उन्हें गर्भावस्था और प्रसव की पीड़ा से दंडित किया — और यह दंड उनकी संतानों के लिए भी बताया गया, जैसा कि उत्पत्ति 3:16 में है।

जबकि कुरआन में स्पष्ट किया गया कि आदम (उन पर शांति हो) की अवज्ञा का कारण शैतान का बहकावा था — न कि उनकी पत्नी हव्वा — जैसा कि [सूरह अल-आराफ़: 19-22] और [सूरह ताहा: 120-122] में है।

इस प्रकार इस्लाम ने महिलाओं के प्रति उस तिरस्कार को समाप्त किया जो पहले के धर्मों में मौजूद था। इस्लाम ने जीवन के हर चरण में महिलाओं के सम्मान का आह्वान किया।

एक उदाहरण है पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) का कथन: "औरतों के साथ अच्छा व्यवहार करो।" [सहीह बुखारी]

और एक और कथन: "जिस किसी के पास बेटी हो और वह उसे जीवित रखे, उसका अपमान न करे और अपने बेटे को उस पर प्राथमिकता न दे — तो अल्लाह उसे जन्नत में दाखिल करेगा।" [इमाम अहमद ने रिवायत की]

► युद्धों का विषय:

यहूदी और ईसाई धर्मग्रंथों में युद्धों की ऐसी कहानियाँ मौजूद हैं जो महिलाओं, बच्चों, बूढ़ों और सभी को नष्ट करने की बात करती हैं — जैसे योशुआ (Joshua) 6:21 में — जिससे वर्तमान समय में हत्याओं, नरसंहारों (जैसे कि फ़िलिस्तीन में हो रहा है) के प्रति उदासीनता और निर्दयता को समझा जा सकता है।

इसके विपरीत, इस्लाम ने युद्धों में भी सहिष्णुता (tolerance) की मिसाल पेश की — जैसे कि धोखा देने, बच्चों, महिलाओं, बूढ़ों और न लड़ने वालों की हत्या से मना किया गया।

पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) का कथन है: "किसी नवजात शिशु, बच्चे, स्त्री या वृद्ध व्यक्ति की हत्या मत करो।" [इसे अल-बैहकी ने रिवायत किया]

उन्होंने युद्ध के बंदियों के साथ भी दया और भलाई का आदेश दिया, और उन्हें नुकसान पहुँचाने से मना किया।

❏ इस विषय में कृपया पुस्तक: “इस्लाम की शिक्षाएँ और कैसे वे पूर्व और वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती हैं “Islam's Teachings and How They Solve Past and Current Problems”” का संदर्भ लें।

- तीसरा बिंदु:

वे चमत्कार और असाधारण घटनाएँ जो अल्लाह ने पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) के हाथों पर प्रकट कीं — ताकि ये इस बात की गवाही बनें कि अल्लाह ने उन्हें अपना समर्थन और पुष्टि प्रदान की। ये चमत्कार दो प्रकार के थे:

- मूर्त (भौतिक) चमत्कार, जैसे कि पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) की उंगलियों से पानी का बहना, जिसने कई बार मुसलमानों को प्यास से मरने से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- अमूर्त (गैर-भौतिक) चमत्कार, जैसे कि:

- उनकी की गई दुआओं का स्वीकार होना, जैसे कि बारिश के लिए की गई उनकी दुआ का तुरंत उतरना।

- उनका अनदेखी बातों के बारे में पूर्वज्ञान देना (भविष्यवाणियाँ करना) — जैसे कि:

- उन्होंने मिस्र, कुस्तुंतुनिया (कॉन्स्टेंटिनोपल), और यरूशलेम की भविष्य में जीत की भविष्यवाणी की, और बताया कि मुसलमानों का प्रभुत्व इन क्षेत्रों तक फैलेगा।

- उन्होंने फ़िलिस्तीन के अशकलान (Ascalon) शहर की विजय और उसके ग़ज़ा में शामिल होने की भविष्यवाणी भी की — जिसे इतिहास में “ग़ज़ा अशकलान” कहा जाता था — और यह उनके इस कथन में निहित है:

“तुम्हारा सबसे उत्तम जिहाद सीमाओं की रक्षा करना है, और सबसे अच्छा जिहाद अशकलान में है।” [सिलसिला सहीहा – अल-अलबानी]

जो यह सूक्ष्म रूप से इंगित करता है कि हदीस में उल्लिखित यह स्थान भविष्य में एक महान जिहाद का क्षेत्र होगा, जहाँ अल्लाह के मार्ग में डटे रहने और रक्षा करने वाले श्रेष्ठ योद्धाओं को महान धैर्य की आवश्यकता होगी। उन्होंने जो कुछ भी भविष्यवाणी की, वह सब सच साबित हुआ।

पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) ने जो कुछ भी भविष्यवाणी की थी, वह सब पूरी तरह से सच हुई।

➤ उन्होंने कई वैज्ञानिक वास्तविकताओं की भविष्यवाणी भी की, जो उस समय के लिए अज्ञात थीं, और 1400 वर्षों बाद आधुनिक विज्ञान ने उनकी बातों की सच्चाई और सटीकता की पुष्टि की।

○ इसका एक उदाहरण है:

“जब वीर्य की बूँद पर बयालीस रातें बीत जाती हैं, तो अल्लाह एक फ़रिश्ते को भेजता है, जो उसे आकार देता है और उसकी सुनने की शक्ति, देखने की शक्ति, त्वचा, मांस और हड्डियाँ बनाता है।” [सहीह मुस्लिम में वर्णित]

आधुनिक विज्ञान ने यह खोजा है कि भ्रूण के निर्माण के सातवें सप्ताह की शुरुआत में — विशेष रूप से 43वें दिन से — उसके कंकाल की संरचना फैलने लगती है, और मानव रूप प्रकट होने लगता है, जो कि पैगंबर (उन पर शांति हो) के कथन की पूर्ण पुष्टि करता है।

● कुरआन का चमत्कार (जो क्रियामत के दिन तक बाक़ी रहने वाला सबसे महान चमत्कार है) — अपनी अद्वितीय शैली में — ऐसा है कि प्रभावशाली और सुबोध भाषी अरब भी इसकी सबसे छोटी सूरह जैसी एक सूरह भी नहीं बना सके।

- पवित्र कुरआन ने अनेक अदृश्य बातों (भूत, वर्तमान और भविष्य) का उल्लेख किया है, जिनमें कई वैज्ञानिक तथ्य भी शामिल हैं जिन्हें कोई भी 1400 साल पहले नहीं जान सकता था। बाद में आधुनिक विज्ञान ने उन तथ्यों की सच्चाई और सटीकता को खोजा जिन्हें कुरआन ने बताया था। यही कारण है कि विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों के कई विद्वान इस्लाम स्वीकार कर चुके हैं।

[उनमें से एक जिन्होंने पवित्र कुरआन में खगोलीय तथ्यों के प्रति गहरी प्रशंसा व्यक्त की है, प्रोफ़ेसर योशिहिदे कोजाई हैं, जो जापान के टोक्यो वेधशाला के निदेशक थे।]। इसका एक उदाहरण यह है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ब्रह्मांड का विस्तार करते रहेंगे, जैसा कि उनकी बात में आया है:

"और आकाश को हमने शक्ति के साथ बनाया, और निस्संदेह हम उसका विस्तार करने वाले हैं" [अज़-ज़ारियात: 47]।

यह बात केवल इस आधुनिक युग में ही वैज्ञानिक रूप से खोजी जा सकी। कितना सटीक है पवित्र कुरआन का कथन और उसका ज्ञान और चिंतन की ओर आह्वान!

➤ कुरआन के जिन पहले आयतों को अल्लाह ने नाज़िल किया, वे ये हैं:

"पढ़ो अपने पालनहार के नाम से, जिसने पैदा किया" [अल-अलक़: 1]।

यह आयत स्पष्ट करती है कि पढ़ना ही ज्ञान और समझ की ओर ले जाने वाला मार्ग है, और यही मार्ग मानवता को जीवन के सभी क्षेत्रों में उन्नति की ओर ले जाता है।

❧ कृपया इस पुस्तक की ओर भी देखें: " इस्लाम और आधुनिक विज्ञान की खोज ,हज़रत मुहम्मद, सल्लाहो अलैहे व सल्लम" "अल्लाह के नबी और रसूल होने के सबूत में "Islam and the Discoveries of Modern Science as the evidence and proofs of the prophethood and messengership of Muhammad (peace be upon him)""।

■ तार्किक टिप्पणी:

उपरोक्त जो कुछ कहा गया, वह एक निष्पक्ष मानदंड है जिसे किसी भी स्तर की बुद्धि वाले व्यक्ति द्वारा समझा जा सकता है — ताकि किसी भी नबी या रसूल की विश्वसनीयता और उसकी दावत एवं संदेश की सत्यता का पता लगाया जा सके।

यदि किसी यहूदी या ईसाई से पूछा जाए:

आपने किसी पैगंबर की पैगंबरी पर क्यों विश्वास किया, जबकि आपने उनके किसी भी चमत्कार को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा?

उत्तर होगा: उनके चमत्कारों के वर्णनकर्ताओं की लगातार मिलती रहने वाली गवाही के कारण।

✓ यह उत्तर तार्किक रूप से पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) पर विश्वास की ओर ले जाएगा, क्योंकि उनके चमत्कारों के वर्णनकर्ताओं की निरंतर और प्रचुर गवाही किसी भी अन्य पैगंबर से अधिक है।

■ इसके अतिरिक्त, अल्लाह द्वारा संरक्षित उनकी जीवनी (सिरा) के माध्यम से उनकी दावत की सच्चाई स्पष्ट रूप से सामने आती है:

1. वे हमेशा उसी पर अमल करने के लिए तत्पर रहते थे जिसकी ओर उन्होंने लोगों को बुलाया — जैसे कि इबादत के सही तरीके, उच्च कोटि की

शिक्षाएँ, श्रेष्ठ नैतिक गुण — और साथ ही इस अस्थायी दुनिया में उनका तक्रवा (अल्लाह का डर) और जुहद (संसार से विरक्ति)।

2. पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) को मक्का वालों ने यह कहकर बहुत कुछ दिया — धन, रियासत, मान-सम्मान, और उनके कुलीन बेटियों से विवाह का प्रस्ताव — अगर वे अपनी दावत, जो थी अल्लाह की एकता, केवल उसकी इबादत, मूर्ति पूजा का त्याग, भलाई करने का आदेश, और बुराई से रोकने की पुकार, सब छोड़ दें। लेकिन उन्होंने यह सब ठुकरा दिया और भारी उत्पीड़न, शत्रुता, यातना और अंततः जंगों का सामना किया।

3. उन्होंने अपने साथियों और उम्मत से खुद की प्रशंसा में अतिशयोक्ति न करने की शिक्षा दी। उन्होंने फरमाया:

“मेरी तारीफ़ उस तरह से न करो जैसे कि ईसाइयों ने मरियम के बेटे की की; मैं केवल अल्लाह का बन्दा हूँ, इसलिए कहो: ‘अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल।’”

[सहीह बुखारी]

4. अल्लाह ने उनकी उस समय तक रक्षा की जब तक उन्होंने अपना संदेश पूरी तरह पहुंचा नहीं दिया, और अल्लाह ने उन्हें इस्लामी राज्य की स्थापना से प्रसन्न किया।

✓ क्या इन सब प्रमाणों से यह स्पष्ट नहीं होता कि मुहम्मद (उन पर शांति हो) अपने दावे में सच्चे हैं और अल्लाह के रसूल हैं?

■ **भविष्यवाणियों से संबंधित ऐतिहासिक संकेत:**

➤ हम देखते हैं कि व्यवस्थाविवरण (Deuteronomy 33:2) में वाक्यांश "और वह दस हज़ार पवित्र लोगों के साथ आया" को अरबी पाठ से हटा दिया गया है, जो [और वह पारान पर्वत से प्रकाशमान हुआ] वाक्यांश के बाद आता है। यह वाक्यांश पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) की भविष्यवाणी से मेल खाता है, जिसमें सूरज के उगने और उसके प्रकाश के फैलने का प्रतीक प्रयोग किया गया है।

उत्पत्ति (Genesis 21:21) में कहा गया है: "और वह — इस्माईल — पारान के जंगल में बस गया।"

यह निरंतर परंपरा से ज्ञात है कि इस्माईल (उन पर शांति हो) हिजाज़ की भूमि में रहते थे। इसलिए, पारान के पर्वत हिजाज़ के वे पर्वत हैं जो मक्का में स्थित हैं।

इसलिए यह स्पष्ट रूप से पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) की ओर संकेत करता है, जब वे मक्का में बिना रक्तपात के विजयी होकर प्रवेश करते हैं और उसके लोगों को क्षमा करते हैं, अपने दस हज़ार साथियों के साथ।

यह छोड़ा गया भाग ["और वह दस हज़ार पवित्र लोगों के साथ आया"] किंग जेम्स संस्करण (King James Version), अमेरिकन स्टैंडर्ड संस्करण (American Standard Version), और एम्प्लीफाइड बाइबल (Amplified Bible) में पुष्टि किया गया है।

➤ इसी तरह, भजन संहिता (Psalms 84:6) में तीर्थयात्रियों के भजन में (Baca) शब्द को अरबी पाठ में बदल दिया गया है ताकि यह स्पष्ट रूप से काबा की तीर्थयात्रा (मक्का) का संकेत न करे, जो पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) का जन्मस्थान है।

(मक्का) को (Baca) कहा जाता है, जैसा कि पवित्र कुरआन में [आल-इमरान: 96] में उल्लेख है।

यह पाठ किंग जेम्स संस्करण और अन्य संस्करणों में [valley of Baca] के रूप में पुष्टि किया गया है, जहाँ शब्द [Baca] का पहला अक्षर बड़ा (capital) लिखा गया है ताकि यह स्पष्ट हो कि यह एक व्यक्तिवाचक संज्ञा है — और व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का अनुवाद नहीं किया जाता।

📖 अधिक जानकारी के लिए कृपया इस पुस्तक का अध्ययन करें: “मुहम्मद (ﷺ) वास्तव में अल्लाह के नबी हैं “Muhammad (Peace be upon him) Truly Is the Prophet of Allah”

■ इस्लाम की संतुलितता और सार्वभौमिकता

इस्लाम शांति का धर्म है जो सभी को अपनाता है, उनके अधिकारों को मान्यता देता है, और अल्लाह के सभी पैगंबरों पर ईमान लाने की पुकार देता है।

- इस्लाम हर चीज़ में संतुलन के साथ आता है, विशेष रूप से आस्था के मामलों में, और वह ईसाई धर्म के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करता है,

जो कि मसीह (उन पर शांति हो) का विषय है। इस्लाम निम्न बातों की ओर बुलाता है:

- मसीह यीशु (उन पर शांति हो) की पैगंबरी पर विश्वास करना, उनके चमत्कारी जन्म पर विश्वास करना, और उनके पालने में बोलने को एक ईश्वरीय चमत्कार के रूप में मानना — यह उनके पैगंबर होने का प्रमाण था और उनकी माता पर यहूदियों द्वारा लगाए गए अनैतिक आरोपों को झुठलाने और उनकी मर्यादा की रक्षा हेतु एक संकेत था।

✓ तार्किक दृष्टिकोण से:

यह एक संतुलित और तर्कसंगत कथन है, न कि यहूदियों की तरह मसीह (उन पर शांति हो) के संदेश को झुठलाना, उनके जन्म को व्यभिचार से जोड़ना, और उनकी माँ पर अनैतिकता का आरोप लगाने जैसा है; और न ही ईसाइयों की तरह अति और अतिशयोक्ति है जिन्होंने उन्हें ईश्वरत्व प्रदान कर दिया।

■ तर्कपूर्ण दृष्टिकोण से इस बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए:

✓ जिस प्रकार स्वाभाविक प्रकृति (फितरत) और सही सोच इस बात को कभी स्वीकार नहीं कर सकती कि मानव स्वभाव को किसी जानवर के स्वभाव के साथ मिलाकर कोई ऐसा अस्तित्व उत्पन्न किया जाए जो आधा मनुष्य और आधा जानवर हो — जैसे किसी मनुष्य का गाय या अन्य जानवर से विवाह करना और फिर एक ऐसा प्राणी उत्पन्न होना जो दोनों स्वभावों को संयुक्त रूप से धारण करता हो — तो यह स्वाभाविक रूप से मनुष्य का अपमान और उसके स्तर को गिराना माना जाएगा, भले ही दोनों (मनुष्य और जानवर) ईश्वर की सृष्टि हों।

ठीक उसी तरह, शुद्ध फितरत (स्वाभाविक अंतःकरण) और तर्कपूर्ण सोच यह भी नहीं स्वीकार कर सकती कि ईश्वर का दिव्य स्वभाव किसी मानव स्वभाव के साथ मिलकर कोई ऐसा अस्तित्व उत्पन्न करे, जो एक साथ ईश्वर भी हो और मनुष्य भी। क्योंकि ऐसा मानना ईश्वर की महानता और पवित्रता का अपमान है, और उसकी वास्तविकता को न्यून और अपमानित करने के बराबर है।

विशेषकर तब, जब इस विश्वास में यह भी शामिल हो कि:

- वह (ईश्वर का स्वरूप कहा जाने वाला) व्यक्ति एक औरत के गर्भ से जन्म लेता है, वह मनुष्यों द्वारा अपमानित होता है — जैसे उस पर थूका जाता है, थप्पड़ मारा जाता है, कपड़े उतार दिए जाते हैं, फिर उसे क्रूस पर लटका कर मार दिया जाता है, और अंत में दफन कर दिया जाता है।

- तो यह सब मिलकर यह दर्शाता है कि ऐसा विश्वास ईश्वर के गौरव, महिमा और उसकी पूर्ण पवित्रता के सर्वथा विरुद्ध है। क्या कोई सच्चा और विवेकशील हृदय यह स्वीकार कर सकता है कि सृष्टि का महान और सर्वशक्तिमान रचयिता — जो न जन्मा है और न मरेगा — इन अपमानजनक स्थितियों का शिकार हो सकता है?

- इसलिए, इस्लाम का दृष्टिकोण इस विषय में सबसे संतुलित, पवित्र और तर्कसंगत है — वह मसीह ईसा (अलैहिस्सलाम) को एक महान पैगंबर और अल्लाह का बंदा मानता है, जो चमत्कारों के साथ भेजे गए थे, और जिन्हें उनकी माता मरियम (अलैहा सलाम) के सम्मान की रक्षा के लिए पालने में बोलने का चमत्कार दिया गया था, लेकिन उन्हें ईश्वर या ईश्वर का पुत्र नहीं माना जाता।

✓ यह सर्वविदित है कि मसीह (उन पर शांति हो) भोजन करते थे और उन्हें मल त्याग करने की आवश्यकता होती थी।

यह ईश्वर की गरिमा के अनुकूल नहीं है कि उसे ऐसे गुणों के साथ वर्णित किया जाए, या यह कहा जाए कि वह एक ऐसे मानव शरीर में अवतरित हुआ जो सोता है, मूत्र और मल त्याग करता है, और जिसके पेट में गंदगी और अपवित्रता होती है।

✓ जिस प्रकार एक छोटा और सीमित बर्तन समुद्रों के जल को समाहित नहीं कर सकता, उसी प्रकार यह स्वीकार करना भी तर्कसंगत नहीं है कि ईश्वर को एक दुर्बल प्राणी की गर्भ में समाहित किया जा सकता है।

✓ जिस प्रकार यह तर्कसंगत नहीं है कि कोई व्यक्ति अपने पिता या माता के पाप का बोझ उठाए — और ईसाई धर्मग्रंथ स्वयं इसकी पुष्टि करता है: “पिता को बच्चों के लिए, और बच्चों को पिता के लिए मृत्युदंड नहीं दिया जाएगा; हर व्यक्ति को अपने ही पाप के लिए मारा जाएगा।” (व्यवस्थाविवरण 24:16), और यह भी कहा गया है: “जो पाप करता है वही मरेगा; पुत्र पिता के पाप का दंड नहीं भोगेगा, और न ही पिता पुत्र के पाप का। धर्म की धार्मिकता उसी के

लिए होगी, और दुष्ट की दुष्टता उसी पर आएगी।" (यहेजकेल 18:20)। इसी प्रकार, यह भी तर्कसंगत नहीं है कि आदम की संतान उस पाप का बोझ उठाए जिसे उन्होंने किया ही नहीं, केवल इसलिए कि उनके पूर्वज आदम ने आज्ञा उल्लंघन किया था। इसलिए, "वंशानुगत पाप" की धारणा स्वयं बाइबिल के अनुसार अस्वीकृत है, और "प्रायश्चित" की अवधारणा भी तर्कहीन और त्रुटिपूर्ण सिद्ध होती है।

✓ यह मानते हुए कि आदम की अवज्ञा (जो केवल निषिद्ध वृक्ष से फल खाने की थी) के लिए परमेश्वर की क्षमा पाने हेतु सूली पर चढ़ाना और हत्या करना आवश्यक था, तो फिर सूली पर चढ़ाया जाना और मारा जाना स्वयं आदम को क्यों नहीं हुआ — वही तो पापी था — न कि मसीह को, जो एक उपदेशक, धर्मपरायण शिक्षक, अल्लाह के भक्त और अपनी माता के प्रति समर्पित थे? इसके अलावा, यह दावा करना कि स्वयं ईश्वर को सूली पर चढ़ाया जाना और मारा जाना आवश्यक था, जबकि यह भी कहा जाता है कि वह एक मानव रूप में अवतरित हुए — यह कैसे तर्कसंगत हो सकता है?

✓ और फिर, आदम के बाद मानव जाति द्वारा किए गए बड़े-बड़े पाप और अपराधों का क्या? क्या उनके लिए एक और नए मानव रूप में ईश्वर का अवतरण, क्रूस पर चढ़ाया जाना और मारा जाना आवश्यक होगा? यदि ऐसा हो तो मानव जाति को हजारों मसीह की आवश्यकता होगी, ताकि वे इस कथित प्रायश्चित की भूमिका निभा सकें।

✓ यदि आदम ने अपने पाप पर पश्चाताप किया और ईश्वर से क्षमा माँगी, तो ईश्वर उन्हें क्षमा क्यों नहीं कर सकते थे जैसे वह अन्य पापों को क्षमा करता है? क्या वह ऐसा करने में सक्षम नहीं है? निश्चित रूप से वह पूर्ण सामर्थ्यवान है।

✓ और यदि मसीह की दिव्यता का दावा इस पर आधारित है कि उनका जन्म पिता के बिना हुआ, तो हम आदम के बारे में क्या कहेंगे, उन पर शांति हो, जिन्हें बिना पिता और माता के पैदा नहीं बल्कि बनाया गया था?!

✓ यदि मसीह की ईश्वरता का आधार उनके चमत्कार हैं, तो फिर पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अन्य नबियों के बारे में क्या कहा जाए, जिन्होंने अनेक चमत्कार किए? क्या उनके बारे में भी यह दावा किया जा सकता है कि वे ईश्वर हैं? निश्चित ही नहीं।

■ एक महत्वपूर्ण तार्किक स्पष्टीकरण भी है:

चूंकि ईसाई धर्म मसीह (ईसा अलैहिस्सलाम) को एक "दैवीय मुक्तिदाता" (Divine Redeemer) मानता है, तो उनकी प्रकृति (स्वरूप) या तो नश्वर (मरणशील) है या अमर (अमरणशील)। इस आधार पर निम्नलिखित बातें स्पष्ट हैं:

1. यदि मसीह की प्रकृति नश्वर है, तो वह ईश्वर नहीं हो सकते। और इस स्थिति में, यह दावा कि वह एक ही समय में ईश्वर भी हैं और मुक्तिदाता भी, स्पष्ट रूप से अमान्य हो जाता है।

2. यदि मसीह की प्रकृति अमर है, क्योंकि वह ईश्वर हैं (जैसा कि दावा किया गया है), तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह मरे ही नहीं। और यदि वह मरे ही नहीं, तो फिर *प्रायश्चित* (atonement) की पूरी अवधारणा ही शून्य हो जाती है। यानी कि कोई मोक्ष या क्षमा का बलिदान हुआ ही नहीं।

- हमने पहले भी जो तर्क प्रस्तुत किया कि *ईश्वरत्व और मानवता के संयोग* का विचार एक तर्कहीन और अस्वीकार्य अवधारणा है, वही बात उन अन्य प्राचीन धार्मिक विश्वासों पर भी लागू होती है, जिन्होंने अपने-अपने समाजों में विभिन्न समयों पर ईश्वर को मानवीय रूप में अवतरित होने का दावा किया। उदाहरणस्वरूप:

- भारत में कृष्ण का विचार, पूर्वी एशियाई समाजों में बुद्ध का दावा, और प्राचीन मिस्रियों में होरस का मिथक — ये सभी ऐसे उदाहरण हैं जिनमें "मनुष्य रूप में ईश्वर" के विचार को प्रस्तुत किया गया, और जिनकी कहानियाँ ईसा मसीह के किस्सों से कहीं पुरानी हैं।

✓ अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि "ईश्वर के मानव रूप में अवतरित होने" का यह विश्वास किसी दैवीय प्रकाशना (divine revelation) या तार्किक प्रमाण पर आधारित नहीं है, बल्कि यह प्राचीन समाजों की कल्पनाओं, मिथकों, किंवदंतियों और कहानियों से उधार लिया गया विचार मात्र है, जिसे विभिन्न रूपों में दोहराया गया है।

■ स्पष्ट स्पष्टीकरण:

ईसाई धर्म ईसा मसीह (उन पर शांति हो) की *ईश्वरता* (divinity) का दावा करता है, जबकि उन्होंने स्वयं कभी भी—किसी भी सुसमाचार (Gospels) में—इस बात को स्पष्ट रूप से नहीं कहा, जैसे कि यह कहना: "मैं ही ईश्वर हूँ"

या “मेरी उपासना करो”। और ना ही उन्होंने अपने शिष्यों (disciples) को कभी इस बात की कोई शिक्षा दी।

- इसके विपरीत, मत्ती 21:11 (Matthew 21:11) में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि मसीह एक *नबी* (prophet) हैं:

"लोगों ने उत्तर दिया: 'यह यीशु है, वह नबी है...'"

- इसके अलावा, ईसा (उन पर शांति हो) ने अपने शिष्यों को *सज्दा* (साष्टांग प्रणाम) करके प्रार्थना करना सिखाया — जैसा कि मत्ती 26:39 (Matthew 26:39) में उल्लेख है।

- तो प्रश्न उठता है: वह किसको सज्दा कर रहे थे? क्या वह अपने ईश्वर को ही सज्दा नहीं कर रहे थे? इस्लाम में प्रार्थना (नमाज़) इसी प्रकार की जाती है।

- ईसा मसीह ने अपने शिष्यों को परस्पर शांति का अभिवादन करना भी सिखाया, जैसा कि यूहन्ना 20:21, 26 (John 20:21, 26) में वर्णित है। यह वही *इस्लामी अभिवादन* है, जो इस प्रकार होता है: “आप पर शांति हो” और उत्तर होता है: “आप पर भी शांति हो” ।

✓ बहुत से लोग जब इस्लाम को अपनाते हैं, तो वे कहते हैं:

“अब हम पहले से भी बेहतर ईसाई हैं, क्योंकि अब हम वास्तव में मसीह की शिक्षाओं का पालन कर रहे हैं।”

■ हम स्पष्ट करते हैं:

पवित्र कुरआन में "सूरा मरयम" (Surah Maryam) नामक एक पूर्ण अध्याय है, जो ईसा मसीह और उनकी माता मरयम (उन दोनों पर शांति हो) को ऐसे सम्मान के साथ प्रस्तुत करता है जो स्वयं बाइबल में भी इस रूप में नहीं मिलता।

- इस्लाम ईसा मसीह (उन पर शांति हो) और उनकी माता के दर्जे को ऊँचा स्थान देता है,

और यह आदेश देता है कि ईसा मसीह पर एक महान पैगंबर के रूप में ईमान लाया जाए, जिन्हें अल्लाह द्वारा भेजा गया था।

साथ ही, उनकी उन शिक्षाओं का पालन करने की शिक्षा दी जाती है जो इस्लाम की शिक्षाओं से मेल खाती हैं — जैसा कि अंतिम पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) लेकर आए।

❧ कृपया इन पुस्तकों को देखें:

“एक ईसाई और एक मुसलमान के बीच शांतिपूर्ण संवाद “A Quiet Dialogue Between a Christian and a Muslim.””

“इस्लाम को धर्म के रूप में क्यों अपनाएं? “Why choose Islam as a religion?””

■ **निष्कर्षतः** चूँकि यह प्रस्तुति वस्तुनिष्ठ रही है, और उस स्पष्ट तर्क से सहमत है जिसे अल्लाह ने हमें सही और गलत के बीच अंतर करने के लिए प्रदान किया है, और यह उन पवित्र आत्माओं की आकांक्षाओं से भी मेल खाती है जो उच्च और शुद्ध विश्वासों की ओर प्रवृत्त होती हैं, तो यह प्रश्न उठता है हर उस व्यक्ति के लिए जिसने पैगंबर मुहम्मद की दावत और इस्लाम की सत्यता के प्रमाणों के माध्यम से सत्य को पहचान लिया है लेकिन अभी तक ईमान नहीं लाया:

- क्या चीज़ आपको इस्लाम के बारे में ईमानदारी से सोचने से रोक रही है, और यह विचार करने से कि क्या यह धर्म आपको उन प्रश्नों के उत्तर प्रदान करता है जिनके उत्तर आप खोज रहे हैं (विशेष रूप से अल्लाह (ईश्वर) में विश्वास से संबंधित प्रश्नों के लिए), जिनके उत्तर आपको अन्य धर्मों में नहीं मिलते?

क्योंकि आप अपने विश्वासों और अपने चुनावों में सत्य की खोज के लिए अल्लाह के सामने ज़िम्मेदार होंगे।

- इस्लाम को चुनकर मुझे क्या नुकसान हो सकता है अगर मैं जीत जाता हूँ, एक ऐसा धर्म जो मुझे सभी प्रश्नों के तर्कसंगत और सरल उत्तर प्रदान करता है बिना यह कि वह मेरे मन को किसी निश्चित धारणा को अपनाने के लिए बाध्य करे, और मैं ईसा मसीह (उन पर शांति हो) में अपना विश्वास नहीं खोता (उस सही रूप में जो प्रकृति के अनुकूल है और स्पष्ट तर्क व बुद्धि के विरुद्ध नहीं है), और मैं उनके प्रति अपने प्रेम और सम्मान को भी नहीं खोता, क्योंकि इस्लाम में ईसा मसीह (उन पर शांति हो) को एक उच्च और महान दर्जा प्राप्त है, जैसे कि उनकी माता मरयम (उन पर शांति हो) को भी, और मैं किसी भी नबी में अपना विश्वास नहीं खोता?

अल्लाह हम सभी को भलाई और सत्य की ओर मार्गदर्शन दे।